इन्सान रहेगा और न इन्सानियत। दुर्जनता के लिए पहले इन्सान को कायम रखकर कुछ ऊधम मचाना संभव था, लेकिन अब नहीं है। यद्यपि आज भी दुर्जनता का इधर-उधर, गाँव में कुछ फैलाव होता है, क्योंकि विज्ञान अभी उतना फैला नहीं है। यह संधिकाल है, इसलिए थोड़ी देर दुर्जनता का जोर चलेगा। लेकिन आगे के जमाने में सज्जनता का फैलना आसान होगा। इसलिए जिसके जीवन में सज्जनता होगी, उसकी वाणी में जोर आयेगा।

कश्मीर-दर्शन

भगवान बुद्ध के जमाने में उनकी हत्या करने के लिए उन्हीं-का एक रिश्तेदार खड़ा हुआ। ईसामसीह को सूली पर चढ़ाया गया। सॉक्रेटिस को जहर पिलाया गया। गांधीजी को कत्ल किया गया, यह भी पुराने जमाने की बात है। इसपर आप कहेंगे कि अभी भंडारनायक को कत्ल किया गया, लेकिन वह दूसरी मिसाल है, सियासत की मिसाल है। सियासत में गिरफ्तार लोगों की बात अलग है। सियासत भलाई के साथ-साथ काफी बुराई करती है। गांधीजी का कुल जीवन आध्यात्मिक था। लेकिन फिर भी उन्हें काफी भुगतना पड़ा; क्योंकि उनके साथ जो मालगाड़ी के डब्बे लगे हुए थे, उनमें तरह-तरह का माल पड़ा था। उस सब माल को उन्होंने नहीं ढोया होता तो दूसरी बात थी। लेकिन अब रूहानियत की अपील को ग्रहण करने के लिए दुनिया तैयार है। इसका दर्शन मेरी आँखों को कश्मीर में हुआ। वैसे मानसिक दर्शन तो पहले से ही था। लेकिन आँख से दर्शन कश्मीर में हुआ। मैं नहीं मानता कि कश्मीर में मुझे जो पूरा दर्शन हुआ और हरएक के साथ दिल खोलकर बातें हुईं, वैसा और किसीको हो सकता था, जो सियासत में गिरफ्तार हैं। लोगों ने हमसे यही कहा कि और किसीके सामने हमारा दिल आज तक नहीं खुला। मैं तो कश्मीर में बहुत डरते-डरते गया था, फूँक-फूँककर कदम रख रहा था। मुझे विश्वास नहीं था कि कश्मीर की परिस्थिति में मैं क्या कर सकता हूँ। लेकिन वहाँ जाने पर मेरे सामने सारा चित्र खुल गया और कश्मीर-वैली में प्रवेश करते ही मैंने इतनी खुलकर बातें कीं कि मेरे कुछ हिन्दूमित्रों को डर मालूम हुआ। मैंने वहाँ कहा कि हम ग्रंथों का बोझ नहीं उठायेंगे। मजहब और रूहानियत अलग-अलग है। रूहानियत शाश्वत है, मजहब शाश्वत नहीं है। सब धर्मों में लेने लायक कुछ बातें हैं। इस तरह की बातें सुनने की वहाँके लोगों को आदत नहीं थी, इसी-लिए हमारे कुछ हिन्दूमित्र डरते थे और कहते थे कि आप दुबारा ऐसी बातें मत बोलिये। लेकिन मैं तो वहाँ साफ ही बोलता गया। श्रीनगर की बड़ी सभा में और छोटे गाँवों की सभा में भी मैंने ये बातें कहीं। लेकिन इसका भी वहाँपर कोई गलत असर नहीं हुआ। यह किस कारण से हुआ? इसके मानी यह है कि सुनाने-वाला ठीक हो, पूर्वग्रहदूषित न हो तो लोग ऐसी बातें सुनने के लिए राजी हो जाते हैं।

रूहानियत का निष्क्रियता के साथ जोड़ न रहे

मैं जानता हूँ कि इसके आगे रूहानियत के स्वीकार के लिए, सामूहिक समाधि के लिए, असामूहिक ब्रह्मजिज्ञासा के लिए लोकमानस तैयार है। इसलिए अब हमारे लिए बिलकुल स्टीयर क्लीयर हो गया है। बाकी के झमेले टालकर हम सीधे आगे बढ़ेंगे तो हमारे कार्यकर्ताओं की ताकत खूब बढ़ेगी। मैं चाहता हूँ कि हम गहराई में जायँ। एक-दूसरे को भगवान के भक्त के तौर पर समझें, अपनी हर कृति का संबंध भगवान के साथ जोड़ें। यह एक प्रत्यक्ष वस्तु है। जैसे आप अपने किसी भाई से चार साल नहीं मिले और फिर मिले तो साक्षात दर्शन, रूबरू दर्शन होता है और उसका शरीर, मन, वाणी पर परिणाम होता है। माता अपने बिछुड़े हुए बच्चे से मिलती है तो उसका उसपर परिणाम होता है। वैसे ही हम सीधे परमेश्वर के साथ सबंध जोड़ सकते हैं। यह कोई काल्पनिक बात नहीं है। हमारे कार्य-कर्ता इसे पहचानें तो उनमें शक्ति आयेगी। हमारे कार्यकर्ता निष्क्रिय नहीं हैं। हिन्दुस्तान में रूहानियत का निष्क्रियता के साथ जोड़ हुआ है, जो एक अपूर्ण दर्शन है, अर्ध सत्य है। हम समझते हैं कि इस पार की चीज उस पार लाने में उसका रूप भी बदलता है, यह गलत विचार है।

मैंने कहा था कि जैसे पश्चिमवालों के पास घर बैठे दुनिया को खत्म करने का शस्त्र आया है, वैसे ही घर बैठे दुनिया पर असर डालनेवाली आध्यात्मिक शक्ति हमें हासिल करनी होगी। इसपर कुछ लोग पूछते हैं कि क्या यह आध्यात्मिक शक्ति ध्यान से प्राप्त हो सकती है? क्या यह शक्ति प्रेषण के जैसी है? मैंने कहा कि वैसी नहीं है। जैसे कर्म एक शक्ति है, वैसे ध्यान भी एक शक्ति है, जो नॉनमॉरल है। उसका उपयोग भले काम में भी हो सकता है और बुरे काम में भी। ध्यान अपने में ही रूहानियत नहीं है। ध्यान का उपयोग रूहानियत के लिए भी हो सकता है और मामूली सामाजिक काम के लिए भी हो सकता है। इसलिए कोई ध्यान करे तो रूहानियत हो गयी, यह मानना गलत है।

हम स्थूल जीवन को भी हाथ में लें

हमारे कार्यकर्ता सक्रिय हैं ही। दुनिया के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार होना चाहिए, यह भी जानते हैं। इसके साथ-साथ उनके दिमाग में यह स्पष्ट हो जाय कि अपनी हर कृति को भगवान के साथ जोड़ना है तो फिर वह शक्ति पैदा होगी, जो हम चाहते हैं। सक्रिय समाज-सेवा को हम रूहानी रूप देना चाहते हैं और वह सारी सेवा भगवान के साथ जोड़ना चाहते हैं, भगवदर्पण करना चाहते हैं। इसका थोड़ा-सा आरंभ भक्तों ने किया था। लेकिन उन्होंने समाज-सेवा के स्थूल रूप को नहीं अपनाया। क्योंकि उस जमाने में समाज-सेवा की उतनी सहूलियत नहीं थी। इसलिए वे भाव-प्रदर्शन करके शांत रहते थे। अब हमें स्थूल जीवन को हाथ में लेना पड़ता है और उसका रूप कैसा हो, यह भी बताना पड़ता है।

अब उसके साथ नया विचार जोड़ना होगा कि इहलोक की प्रगति के लिए समूहरूपेण साधना जरूरी है। मैं चाहता हूँ कि हमारे कार्यकर्ताओं का ध्यान इस तरह खिंचे। हम जो चंद भाई हैं, वे इस गहराई में पहुँच जायँ और ताकत महसूस करें। मैं तो इसे बिजली की ताकत के जैसा महसूस कर रहा हूँ। और मैं जानता हूँ कि यह ताकत हमारे जीवन में और वाणी में संचार कर रही है। हमारे सब कार्यकर्ता यही महसूस करें, यह मैं चाहता हूँ। मेरे अज्ञातचार का यही उद्देश्य है। ● ● ●

अनुक्रम

१. हम विश्वामित्र की भाँति नम्र और प्रयत्नशील बनें

हरिके १६ नवंबर '५९ पृष्ठ ७९९

२. हम समाज-सेवा को रूहानी रूप देना चाहते हैं

अमृतसर १७ नवंबर '५९ „ ८०१

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।

www.vinoba.in